नी दारू ननगे ना येनु निनगे। नानीनु अंबोदु प्रकृति स्वभावा।।ध्रु.।।

बिट्ट् नोडु अनुभवा ।।४।।

पद ३१९

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)

प्रथमिल शिवनु अवनिंद जिवनु। शिवनु इल्लदली जीवनु

अभावा।।१।। यहिनु काया अल्ल्यादो छाया। काया इह्रदह्हि

छायानु अभावा।।२।। माणिक ह्यसरिल्ल नी नानु हुट्टल्लि। द्वैत मार्ग

